

اِنَّ الْمُسْلِمِينَ مَصْبَاغُ الْهُدَى وَ سَخِيَّةُ الْاَبَاةِ



سہ ماہی
مصباح الہدی



☆ تعمیری افکار
☆ تحقیقی انداز
☆ شگفتہ بیان
☆ فرمودات قرآن اور تعلیمات اہل بیت
☆ پر مشتمل مضامین پڑھنے کے لئے
مصباح الہدی اردو کے نمبر نمبر

سہ ماہی **مصباح الہدی** (اردو) کے نمبر نمبر

قیمت فی شمارہ: ۶۰ روپیہ سالانہ: ۲۰۰ روپیہ رجسٹرڈ ڈاک سے: ۳۰۰ روپیہ

مدیر اعلیٰ: سید منظر صادق زیدی | مدیر: سید محمد ثقلین جوراسی | نائب مدیر: وقار حیدر اعظمی



نئی نسل
خاص طور پر
جوانوں کے لیے
ہودا میشن کی
ہندی زبان میں
خاص پیشکش



دوماہی
میر خواہل ہودا

دوماہی "میر خواہل ہودا" (ہندی) آج ہی ممبر بنیے اور ساتھیوں کو بھی بنائیے!

پریم مینبر: 40/روپیہ سالانہ: 200/روپیہ رجسٹرڈ ڈاک سے: 300/روپیہ

مکمل سंपادک: منجر سادیک جیدی | سंपادک: تاسدیق حسین ریجیوی
سہا یک: کومل اسسگر جیدی, املی امیر ریجیوی

Huda Mission

Office : Shafaat Market
Zehra Colony, Muftiganj, Lucknow

ہدی مشن

آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج لکھنؤ

Mob: +91-9415090034, 9451085885, 9389830801, 9936193817



اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طوبٰی لَہُمْ وَحَسُنَ مَا یُکَسِبُوْنَ



اکتوبر، 2016 جلد-6، شمارہ-11

یادگار:

مولانا محمد محمد املی اسسف تابا سراہ

ایڈیٹوریل بورڈ:

مولانا تاسدیق حسین ساہب، مولانا سیددول حسن ساہب

مولانا کومل اسسگر ساہب

ایڈیٹر:

سید منجر سادیک جیدی

سب ایڈیٹر:

سید منجر سادیک جیدی

آرٹ اینڈ ڈیزائن:

ایم ایچ

9839099435

Annual Subscription
only Rs. 300/-

Published by:

Huda Mission

Head Off.: Vill. Ghazipur, P.O. Gogwan,
Distt. Muzaffarnagar, U.P. India

Lucknow Office: Shafaat Market
Zahra Colony, Muftiganj, Lucknow-3 (U.P.) INDIA
Mob.: 9415090034, 9451085885, 8726254727

E-mail: tubamonthly@gmail.com

فہرست

1. جنت کی خدکی
2. کورانی کویج
3. تیتسواں سبک
4. امما کیوں روتی ہیں؟
5. اچنابی آادمی
6. نوا
7. بے وقت اچان
8. لالچ بوری بلا ہے
9. دریا کنارے





جنت کی کھڑکی

امام موسیٰ کاظم علیہ السلام فرماتے ہیں
امام مہسا کاظمیٰ اس فرماتے ہیں

مَلْعُونٌ مِّنْ اَغْتَابِ اَخَاهُ.

ملعون ہے وہ جو اپنے (دینی) بھائی کی غیبت کرے۔

ملاؤن ہے جو اپنے دینی بھائی کی غیبت کرے۔

قُلُّهُ الْمَنْطِقُ حُكْمٌ عَظِيمٌ، فَعَلَيْكُمْ بِالصَّبْرِ.

کم بولنا بہت بڑی حکمت ہے پس تمہارے لئے خاموشی ضروری ہے۔

کم بولنا بہت بڑی حکمت ہے بس تمہارے لئے خاموشی ضروری ہے۔

مَنْ اَحْزَنَ وَالِدَيْهِ فَقَدْ عَفَّهٖمَا.

جس نے والدین کو رنجیدہ کیا اس نے ان کی ناشکری اور نافرمانی کی ہے۔

جس نے والدین کو رنجیدہ کیا اس نے ان کی ناشکری اور نافرمانی کی ہے۔

اِنَّ الْعَاقِلَ لَا يَكْذِبُ وَاِنْ كَانَ فِيهِ هَوَاٌ.

عقل مند انسان کبھی جھوٹ نہیں بولتا چاہے جتنا اس کا دل چاہے۔

عقل مند انسان کبھی جھوٹ نہیں بولتا چاہے جتنا اس کا دل چاہے۔

اللَّهُ جَلَّ وَعَزَّ يَبْغِضُ الْعَبْدَ النَّوَّامِ الْفَارِغَ.

خداوند عالم فالتوسونے والوں کو پسند نہیں کرتا۔

خداوند عالم فالتوسونے والوں کو پسند نہیں کرتا۔

الْغَضَبُ مِفْتَاحُ الشَّرِّ.

غصہ ہر برائی کی کنجی ہے۔

غصہ ہر برائی کی کنجی ہے۔



پیارے بچو!

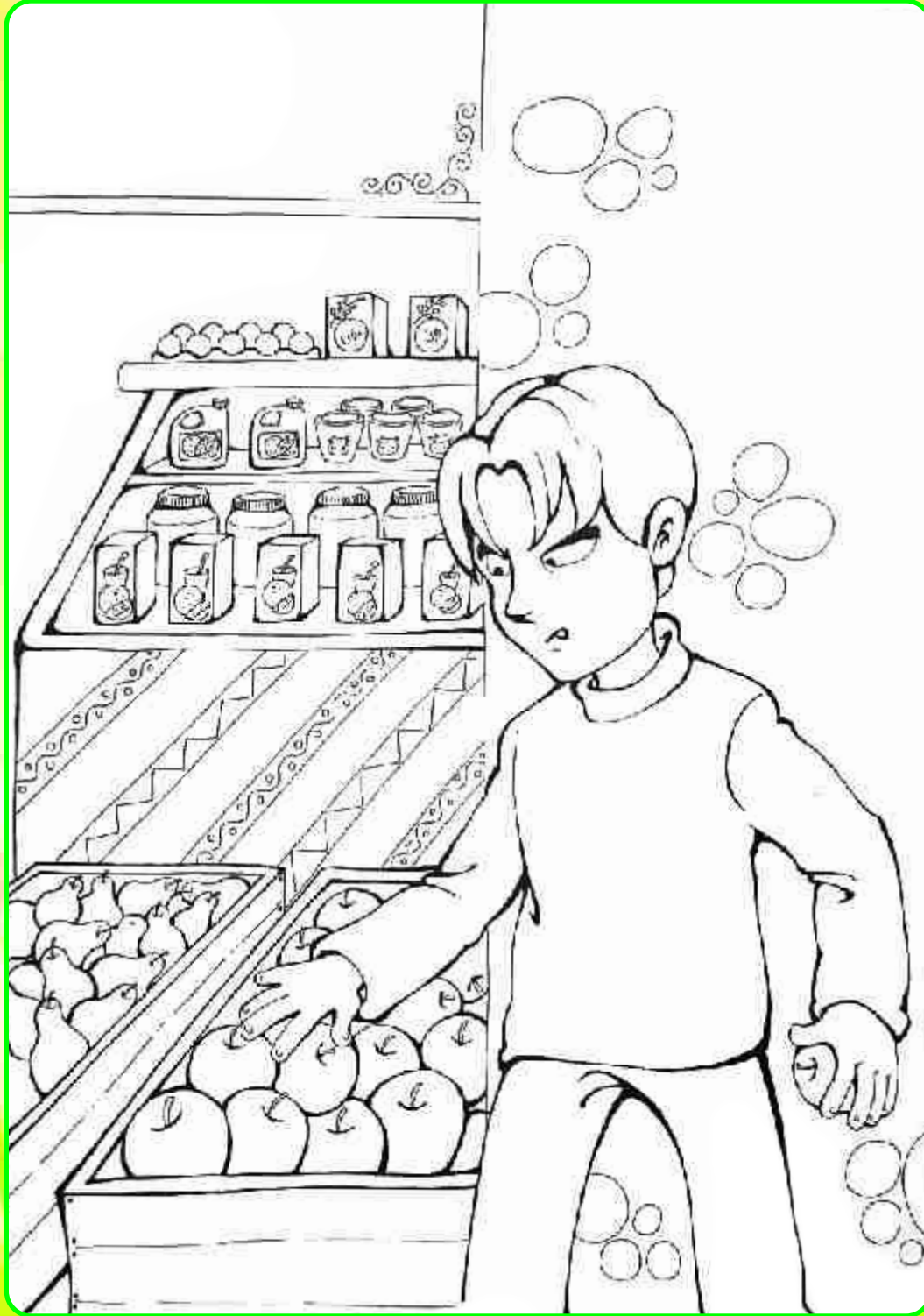
ہم نے آپ کے لیے دلچسپ سلسلہ شروع کیا ہے۔
 اس QUIZ کو خود حل کرنے کی کوشش کریں۔ اس کویز کو
 حل کرنے سے جہاں تمہاری مالومات میں اضافہ ہوگا وہیں کوارنی
 کی تیلانیت کا سواہ بھی ملےگا۔ اپنے جوابات "توا" کے
 دفتر روانہ کریں۔ آپ اپنے جواب ई-میل و SMS کے
 ذریعے بھی بھیج سکتے ہیں۔ سہی جواب دینے والوں کو انعام دیا
 جائےگا۔

SMS On
 09415090034, 09890500072, 09451084885
 E-mail: tubamonthly@gmail.com

- سورہ شمس کون سے نمبر کا سورا ہے اور اس میں کتنی آیات ہیں?
☐ (1) 91, 15 ☐ (2) 111, 5 ☐ (3) 105, 8 ☐ (4) 107, 6
- "دین کی قسم جب وہ روشنی بخشنے" کس سورہ کی کون سی آیت کا ترجمہ ہے?
☐ (1) سورہ طارق چوتھی آیت ☐ (2) سورہ بروج پہلی آیت
☐ (3) سورہ شمس تیسری آیت ☐ (4) سورہ اسر پہلی آیت
- سورہ آلا میں اللہ نے "بہتر اور ہمیشہ رہنے والی" کس کو کہا ہے?
☐ (1) آفریت کو ☐ (2) بہت سے سیتاروں کو
☐ (3) چمکتے ہوئے سیتارے کو ☐ (4) چمکتے ہوئے چاند کو
- "بشک پاکیزہ رہنے والا کامیاب ہوگا" کس سورہ کی کون سی آیت کا ترجمہ ہے?
☐ (1) سورہ شمس چوتھی آیت ☐ (2) سورہ غاشیہ: پہلی آیت
☐ (3) سورہ ممد دوسری آیت ☐ (4) سورہ آلا چودھویں آیت
- سورہ شتاریش کوارنی کا کون سا سورا ہے?
☐ (1) 115 ☐ (2) 110 ☐ (3) 91 ☐ (4) 86
- خدا نے کس سورہ میں شمس کی قسم کھائی ہے?
☐ (1) سورہ فجز ☐ (2) سورہ تین ☐ (3) سورہ طارق ☐ (4) سورہ شمس
- کوارنی کے کس سورہ میں خداوند نے شجر سے جلال آنے کی خبر دی ہے?
☐ (1) سورہ انفطار ☐ (2) سورہ لیل ☐ (3) سورہ فجز ☐ (4) سورہ کوریش
- "جس نے جرح برابر بربائی کی ہے وہ اسے دیکھے گا" کس سورہ کی کون سی آیت ہے?
☐ (1) سورہ فجز پچیسویں آیت ☐ (2) سورہ آلا پہلی آیت
☐ (3) سورہ جلال آٹویں آیت ☐ (4) سورہ انشاکا پہلی آیت



سامنے والی تصویر کو देखکر رنگ भरے



تہتسواں
سبک

خدا سب کچھ جانتا ہے

سب کو سب کچھ جانتا ہے

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ

نحل-91

نبا-9

آیہ

یقیناً اللہ تمہارے ہر عمل سے باخبر ہے۔ یعنی جو کچھ بھی تم کرتے ہو
اللہ اس کے بارے میں سب کچھ جانتا ہے

یقیناً اللہ تمہارے ہر عمل سے باخبر ہے۔
یعنی جو کچھ بھی تم کرتے ہو، اللہ اس کے بارے میں سب کچھ جانتا ہے۔

ترجمہ
ترجمہ

अम्मा क्यों रोती हैं?

मैं देख रहा हूँ कि अम्मा किताब उठाकर पढ़ती हैं, पेज पलटती जाती हैं और रोती जाती हैं। जब से ये किताब उनके हाथ में है उनकी हालत अजीब सी हो रही है। एक दम बदल सी गई हैं। मुझे देखती हैं तो प्यार से मेरे सर पर ऐसे हाथ फेरने लगती हैं जैसे बहुत दिनों से मुझे न देख हो। जब मुझे गोद में लेकर दूध पिलाती हैं तब भी उनकी आँखों से आँसू टपकने लगते हैं। आखिर क्या लिखा है इस किताब में? मैं इतना छोटा हूँ कि पढ़ भी नहीं सकता।

रात मुझे प्यास लगी मैंने पानी माँगा। अम्मा ने मुझे पानी



दिया और फिर आसमान की तरफ सर उठाकर कहने लगीं। “ऐ मेरे खुदा! काश उन बच्चों को भी पानी मिल जाता।”

अब्बू ने भय्या को गोद में उठा रखा था वह रोए जा रहा था। मैं अम्मी की उँगलियाँ पकड़कर चल रहा था मेरे पैरों में दर्द हो रहा था। थोड़ी दूर चलने के बाद मैं अम्मी का हाथ छोड़कर रुक जाता था। अम्मी मेरा हाथ पकड़कर खींच लेती थीं।

हम लोग अभी भी नहीं पहुँचे थे। एक बार फिर मैंने अम्मी से हाथ छुड़ाया और सड़क के किनारे बैठ गया। अम्मी और बाबा भी आ गये अम्मी ने प्यार से कहा “मेरे लाल चलते क्यों नहीं, देर हो रही है।”

मैंने कहा “अम्मी बहुत थक गया हूँ, पैरों की उँगलियों में दर्द हो रहा है, चला नहीं जाता, प्यास भी लगी है।”

अम्मी ने भर्साई हुई आवाज़ में कहा “सोचो वह बच्चे, नंगे पाँव धूप में कैसे चलते होंगे?”

“कौन से बच्चे अम्मी?” मैंने पूछा!

अम्मी ने एक आह भरकर मुझे गोद में ले लिया। और कहा, “उठो बेटा ये नये जूते



तुम्हें परेशान कर रहे हैं। चलो अब ज़्यादा दूर नहीं है। जल्दी पहुँच जायेंगे।”

हम लोग एक जगह पहुँचे जहाँ बहुत सारे लोग जमा थे। बाहर कुछ लोग ठण्डा पानी पिला रहे थे। अन्दर एक आदमी माइक पर कुछ पढ़ रहा था। मैंने देखा सब के सर झुके हुए हैं लोग रो रहे हैं। कुछ तो बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रहे हैं। मैंने देखा अम्मी भी रो रही हैं। मैंने कहा: “अम्मी क्या वह किताब याद आ गई, जो आप रो रही हैं।”

अम्मी ने आँसू पोछकर कहा: “नहीं बेटा मैं तो उन बच्चों को याद करके रो रही हूँ जो प्यासे थे। जिनके नन्हे नन्हे पैरों में तुम्हारे पैरों की तरह छाले पड़ गये थे। जिनके पैरों में चलने से दर्द हो रहा था....”

अम्मी ने फिर किताब उठाई। पेज पलटे, पढ़कर रोना शुरू किया।

भय्या ने भी उठकर रोना शुरू किया वह भूखा जो था। अम्मी ने उसे गोद में लेकर दूध पिलाना शुरू किया, आँखों से आँसू जारी थे।

मैंने अम्मी से कुछ नहीं पूछा, मुझे पता है भय्या भी छः महीने का है। उस छः महीने के प्यारे और प्यासे बच्चे के बराबर जिसकी प्यास का ज़िक्र माइक से हो रहा था और जिसके वाकिये को सुनकर लोग रो रहे थे।





अज नबी आदमी

इमाम जैनुल आबेदीन अस0 के ज़माने की बात है हर रोज़ रात के वक़्त जब शहर वाले बेखबर सो जाते तो एक शख्स अपनी कमर पा खजूरे और रोटियाँ उठाए अन्धेरी गलियों से गुज़रता हुआ भूखे और गरीब लोगों के घरों के दरवाज़ों पर दस्तक देता और उन्हें इस तरह से खाना पहुँचाता कि किसी को पता भी नहीं चलता था कि खाना देने वाला कौन है। कोई भी उसे रात की तारीकी में पहचान नहीं पाता था।

अगर किसी घर में कोई बच्चा रोता हुआ अपनी माँ से कह रहा होता कि अम्मा मैं बहुत भूखा हूँ कुछ खाने को चाहिए तो यह आवाज़ सुनकर उस मर्द की आँखों में आंसू आ जाते और वह खुदा से कहताश्परवरदिगार तु सब भूखों को सेर फरमादे।

किसी घर में एक औरत अपनी दो छोटी बेटियों और एक बेटे के साथ रहती थी बच्चों का बाप दुनिया से जा चुका था यह औरत अपने यतीम बच्चों के हमराह हमेशा इस इन्तेज़ार में रहती कि कब रात हो और दरवाज़े पर दस्तक हो और वह अजनबी बच्चों का पेट भरने के लिये खाना लेकर आये।

एक रात यह औरत अपने बच्चों के साथ देर तक उस शख्स का इन्तेज़ार करती रही लेकिन

वह नहीं आया अगली रात भी इस इन्तेज़ार में गुज़र गयी सुबह के वक़्त जब वह औरत मजबूरन घर से बाहर निकली तो देखा कि उसके दो पड़ोसी आपस में बातें कर रहे थे और दोनों के चेहरों से लग ही रहा था कि वह गुमज़दा हैं।

औरत ने पूछा! खैरियत तो है?

उसने कहा! क्या तुमने सुना नहीं कि इमाम जैनुल आबदीन अस0 शहीद हो गये हैं।

दूसरे ने कहा! ग़ुस्ल के वक़्त लोगों ने देखा कि उनके कंधों पर और कमर पर गहरे ज़ख्म थे।

औरत ने पूछा: लेकिन वह ज़ख्म कैसे थे?

उसने जवाब दिया हर रात खाने पीने का सामान एक बोरी में डालते और यह भारी बोझा उठाकर शहर की गली कूचों में जाते और भूखों, गरीबों, यतीमों, और हकीरों को खाना पहुँचाते थे।

औरत ने सर झुका कर कुछ सोचा और फिर घर के अन्दर चली गयी बच्चों ने देखा माँ की आँखें आंसूओं से तर हैं। बच्ची ने आगे बढ़कर पूछा! अम्मा आप रो क्यों रही हैं?

औरत ने जवाब दिया: तुम यतीम हो गये तुम्हारा सरपरस्त इमाम और रहबर जो हर रोज़ तुम्हारे खाने का इन्तेज़ाम करता था इस दुनिया से रुख़सत हो गया।



नौहा

साबिर आब्बी अलीपुरी

तीर खाकर मुस्कुराता शह का दिलबर इक तरफ़
फेर कर मुँह रो रहा था सारा लश्कर इक तरफ़।
सेर फौजे शाम में लाखों सितमगर इक तरफ़
भूखे प्यासे शाह के साथी बहत्तर इक तरफ़।
बाप रन में खींचता था दिल से बेटे के सिनाँ
सजद ए शुक्रे खुदा करती थी मादर इक तरफ़।
इक तरफ़ थी ईद फौजे शाम में बादे हुसैन
ग़म में शह के नौहा ख़ाँ आले पयम्बर इक तरफ़।
बादे क़त्ले शाहे दीं जब रात आई मोमिनो
इक तरफ़ सहमे हरम थे खुश सितमगर इक तरफ़।
जल रहे थे इक तरफ़ आले पयम्बर के ख़्याम
लूट में मसरूफ़ थी फौजे सितमगर इक तरफ़।
इक तरफ़ असगर के झूले को जलाता था कोई
छीनता कोई सकीना के था गौहर इक तरफ़।
इक तरफ़ ज़ालिम ज़माना शाद है हर गाम पर
आपका साबिर है मौला ज़ार व मुज़तर इक तरफ़।



बे वक़्त अज़ान



बहुत से हुन्हार बच्चे नमाज़ के वक़्त से पहले मस्जिद पहुँच जाते हैं और मस्जिद में अज़ान देते हैं। अज़ान का मतलब है लोगों को अल्लाह की इबादत के लिये बुलाना नमाज़ की दावत देना रसूल स० व० के पहले मोज़िज़न (मस्जिद में अज़ान देने वाले) जनाब बिलाल हबशी थे।

जब से जनाब बिलाल ने मदीना में आज़ान शुरु की उस वक़्त से यह शरई तरीका बन गया कि नमाज़ के वक़्त अज़ान देदी जाती है और लोग नमाज़ के लिये मस्जिद में आ जाते हैं।

सब अज़ानें हमेशा अपने वक़्त पर ही होती हैं।

मगर एक अज़ान ऐसी भी है जो बे वक़्त कही गई।

हाँ अब ज़रा गौर से सुने

जुमे का दिन था मस्जिद तमाशाईयों से खचा खच भरी हुई थी सिर्फ कुर्सीयों पर सात सौ (700) आदमी बैठे हुए थे एक ज़मीर फरोश यानी बिके हुए ने इमाम सज्जाद अ०स० के सामने पहले हज़रत अली और इमाम हुसैन अ०स० को बुरा भला कहा और फिर यज़ीद और उसके बाप की तारीफ शुरु कर दी यह यज़ीद का दौर था।

यज़ीद तख़्ते हुकुमत पर गुरुर व तक़ब्रु

से बराजमान था।

इमाम सज्जाद अ०स० जो बेड़ियों में जकड़े हुए अहले हरम के साथ खड़े थे आपने यज़ीद से फरमाया

ऐ यज़ीद मुझे भी इजाज़त दे कि मैं भी उन लकड़ियों पर जाकर कुछ ऐसी बातें बयान करूँ जिससे अल्लाह राज़ी हो और उन लोगों को भी अज़्र व सवाब हासिल हो यज़ीद यह सुनकर घबरा गया।

मगर लोगों ने कहा यह कैदी क्या बोल पाएगा हम भी कुछ सुनले इजाज़त देदे

यज़ीद बोला अगर यह ऊपर चला गया तो मुझे और अबु सुफयान के खानदान को ज़लील किये बग़ैर नीचे नहीं उतरेगा

लोगों का इसरार(प्रेषर) इतना बड़ा कि यज़ीद इजाज़त देने पर मजबूर हो गया

इमाम ने खुदा वन्दे आलम की हम्दो सना के बाद अपने और अपने खानदान के फज़ाएल बयान करना शुरु किये दरबार में सन्नाटा छा गया आपने कहा ऐ लोगों मैं मक्का ० मिना का बेटा हूँ, मैं ज़मज़म व सफा का बेटा हूँ, मैं उसका बेटा हूँ जिसने फरिशतों को नमाज़ पढ़ाई, मैं उसका बेटा हूँ जिसपर खुदा ने वही नाज़िल



फरमाई, मैं हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा स०व० का बेटा हूँ, मैं अली मुर्तज़ा का बेटा हूँ, मेरे दादा अली इब्ने अबी तालिब हैं, मैं जनाबे फातेमा स०अ० का बेटा हूँ, मैं तमाम औरतों के सरदार का बेटा हूँ, मैं ख़दीजा का बेटा हूँ, मैं उसका बेटा हूँ जिसे जुल्म के साथ शहीद किया गया, मैं उसका बेटा हूँ जिसे आरी से ज़िह्न किया गया, मैं प्यासे शहीद का बेटा हूँ, मैं उसका बेटा हूँ जिसका जनाज़ा करबला में पड़ा रहा, मैं उसका बेटा हूँ जिसका अमामा और अब्बा भी छीन ली गयी यह सुनकर लोग दहाड़े मार मारकर रोने लगे यज़ीद घबरा गया कि कहीं दरबार का नक्शा न पलट जाये इस लिये उसने मोज़िज़न को हुक्म दिया : अज़ान कहो मोज़िज़न ने अज़ान शुरु की।

“अल्लाहो अकबर” इमाम ने कहा यकीनन अल्लाह से बड़ी कोई चीज़ नहीं है।

शअश्शहदोअन्ला इलहा इल्ललाहश इमाम ने कहा मेरे बाल, खाल, खून, और गोश्त खुदा की तौहीद की गवाही देते हैं।

मगर जैसे ही मोज़िज़न कहा शअश्शहदो

अन्ना मुहम्मदुर रसूल अल्लाहश इमाम ने मोज़िज़न से फरमाया तुझे हज़रत मुहम्मद के हक़ का वास्ता चुप ज़रा हो जा फिर यज़ीद का रुख करके कहा: ऐ यज़ीद यह मुहम्मद तेरे जद हैं या मेरे जद हैं अगर तु यह कहता है कि यह तेरे जद है तो तु झूठा है और कुफ़र कर रहा है और अगर यह यकीन रखता है कि मेरे जद हैं तो फिर तूने उनकी औलाद को क्यों क़त्ल कराया? मेरे बाबा को क्यों क़त्ल कराया? उनके घर वालों और बच्चों को क्यों कैदी बनाया।

ऐ लोगो क्या तुम्हारे दरमियांन कोई है जिसके जद रसूले खुदा स०व० हैं? यह सुनकर दरबारे यज़ीद में रोने की अवाज़ें और बलन्द हो गयीं इस तरह जो अज़ान यज़ीद ने दिलाई थी उस अज़ान से इमाम ज़ैनुल आबदीन अ०स० ने उसे ज़लील व रुसवा कर दिया और अपने फज़ाएल व कमालात व मज़लूमियत से लोगों को आगाह कर दिया जिससे दमिश्क़ के शहर में इन्क़ेलाब आ गया और हर एक यज़ीद और उसके साथियों को बुरा कहने लगा....



लालच बुरी बला है

हामिद ने हमेशा की तरह आज फिर जल्दी से रात का खाना खाया और दौड़ता हुआ अपनी दादी के पास पहुँच गया। वह जानता था कि अगर उसने और थोड़ी सी देर की तो उस की दादी सो जाएंगी और वह कहानी नहीं सुन पाएगा। इधर उस की दादी भी बड़ी बे सबरी से अपने नन्हें और शरारती पोते का इन्तेज़ार कर रही थीं क्योंकि उन्हें भी अपने पोते को कहानी सुनाना बड़ा अच्छा लगता था। आज हामिद ने अपनी दादी से कहा दादी कोई सच्ची कहानी सुनाईये।

दादी ने अपने पोते के सर पर हाथ फेरा और बोलीं: हां बेटा! आज मैं तुम्हें एक सच्ची कहानी सुनाती हूँ। अल्लाह के एक नबी की कहानी जिस से हमे जिन्दगी का एक बहुत बड़ा सबक मिलता है।

बेटा! खुदा के एक नबी जिन का नाम हजरत ईसा अ० है। जो लाइलाज बीमारियों का इलाज किया करते थे। मुर्दों को खुदा के हुक्म से जिन्दा करते थे। और उस के अलावा बहुत से ऐसे काम करते थे जो आम इंसानों के बस में नहीं हैं। आज मैं तुम्हे उनकी जिन्दगी का एक अहम किस्सा सुनाती हूँ।

हामिद ने गौर से सुनते हुए कहा: जी दादी जल्दी सुनाईये।

एक दिन हजरत ईसा अ० और उनके तीन साथी शहर से बाहर किसी काम से बाहर निकले। रास्ते में हजरत ईसा उन्हें अच्छी अच्छी बातें बताते जा रहे थे और वह सब सर हिलाकर उनकी बातों की ताइद करते थे। चलते चलते

वह एक ऐसी जगह से गुज़रे जो बिल्कुल सुनसान थी। एक ऐसी जगह जहाँ न कोई इंसान था, न जानवर था और न ही कोई परिन्दा। हजरत ईसा और उन के साथियों ने देखा वहाँ बहुत सारा सोना पड़ा हुआ है। हजरत ईसा अ० ने एक नज़र उस सोने पर डाली और आगे बढ़ गये लेकिन उनके साथियों की आंखें इतना सारा सोना देख कर चमक उठीं और उनके दिल में लालच पैदा हुई। हजरत ईसा अ० ने देखा उनके



साथी सोना देख कर रुक गये हैं। वह पीछे मुड़े और अपने साथियों से कहा: दोस्तो! यह दुनिया है। उस के चक्कर में न पड़ो। यह तुम्हे हलाक भी कर सकती है।

लालच न करो और आगे बढ़ो। कुछ देर के लिए हजरत ईसा के साथियों पर उन की बातों का असर हुआ और वह आगे बढ़ कर दुबारा उनके साथ चलने लगे। वह हजरत ईसा अ० के साथ जरूर चल रहे थे लेकिन उनके दिमाग उसी सोने की तरफ लगा हुआ था और हर एक सोच रहा था कि वह सोना उसे मिल जाए। अब उनमें से हर एक ने बहाना बनाना शुरू किया।

एक ने कहा: ऐ अल्लाह के नबी! मेरे पेट में बहुत दर्द हो रहा है मैं आगे नहीं चल सकता इसलिए मुझे इजाज़त दीजिए मैं यहीं रुक जाऊँ।

दूसरा बोला: ऐ खुदा के पैगम्बर! मुझे एक ज़रूरी काम याद आ गया है जिस के लिए अभी जाना होगा इसलिए मैं इजाज़त चाहूँगा। तीसरे ने बहाना बनाते हुए कहा: हुज़ूर मुझे अपने बीवी बच्चों के लिए बाज़ार से कुछ ज़रूरी चीज़ें लेना है लेहाज़ा मे इजाज़त चाहता हूँ। हजरत ईसा अ० जानते थे कि उनके दिल में क्या है लेकिन वह कुछ नहीं बोले और आगे बढ़ गये और उनके तीनों साथी सोने के पास आकर उसे अच्छी तरह उल्ट पल्ट कर देखने लगे।

दोपहर का वक़्त था। सुनसान जगह थी और उन तीनों को भूख भी लगी हुई थी। उन

तीनों ने तय किया कि कोई एक बाज़ार जाकर खाना ले आए। पहले कुछ खाया जाय उसके बाद सारा सोना आपस में बाँट लेंगे।

उनमें से एक बाज़ार गया ताकि सब के लिए कुछ खाने को लाए। बाज़ार जाते हुए रास्ते में उस के दिल में ख्याल आया कि पहले मैं खुद खाना खालूंगा और अपने दोस्तों के खाने में ज़हरे मिला दूँगा जिसे खाकर वह दोनों मर जाएंगे और सारा माल मुझे मिल जाएगा उसने बाज़ार जाकर खुद खाना खाया और अपने दोस्तों के लिए खाना खरीद कर उसमें ज़हरे मिला दिया।

इधर उसके दोस्तों ने उसे मारने का प्लान बनाया और आपस में तय किया कि वह जैसे ही खाना लेकर आएगा उसे मार देंगे और सारा माल दोनों बाँट लेंगे। वह जैसे ही खाना लेकर आया उस के साथियों ने उसे क़त्ल कर दिया और खुद भी ज़हरीला खाना खा कर चल बसे। लालच ने तीनों की जान ले ली और सोना वहीं पड़ा रहा।

जब हजरत ईसा अपना काम पूरा करके वापस आये तो अपने साथियों को उस सोने के पास मुर्दा पड़ा हुआ देखा। उन्होंने खुदा के हुक्म से उन्हें दोबारा जिन्दा किया और उनसे कहा: मैं ने तुम लोगों से कहा था कि यह दुनिया है। उस के चक्कर में मत आओ।

लालच न करो क्योंकि लालच बुरी बला है और इंसान को हलाक कर देती है। अब तुम ने अपनी आखों से सब कुछ देखा है लिहाज़ा आज के बाद होशियार रहना।



दरिया कनारे

गर्मीयों की छुट्टियाँ बिताने के लिये नासिर और नाज़िम अपनी मम्मी के साथ चम्बा के पास अपनी नानी के घर जा रहे थे, दोनों बहुत खुश थे उनको नानी के घर जाना बहुत अच्छा लगता था वहाँ न उनकी मम्मी उन्हें डाटती थीं और न शरारत करने से रोकती थीं।

पहाड़ी के नीचे उतर कर दस ग्यारा घरों का छोटा सा गाँव था जिसके थोड़ी दूर ही दरिया बहता था खुली फ़िज़ा ताज़ी हवा और दरिया के बहते पानी का नज़ारा उन्हें शहर में कहाँ मिलता। उनकी उमर के और बच्चे वहाँ रहते थे जो हर गर्मीयों की छुट्टियों में उनके आने का इन्तेज़ार करते थे और फिर वो खूब मस्ती करते, पढ़ाई का नाम दूर दूर तक ना लेते नानी भी तरह तरह के पकवान बनाकर ख़िलाती थीं माँ अगर बच्चों को डाटना चाहती तो नानी ऐसा करने ना देती और छुट्टियाँ कब ख़त्म हो जातीं उन्हें पता ही ना चलता।

नानी के घर पहुँचते ही ख़बर फैल गयी और देखते ही देखते सब बच्चे जमा हो गये दूसरे रोज़ से ही उनकी शरारतें शुरू हो गयीं

नासिर अब दस साल का हो गया था अपने आपको समझदार और बड़ा समझने लगा था नाज़िम आठ साल का था उसपर पूरा रोब जमाता नानी ने देखा कि इस बार वो और ज़ियादा शरारती हो गया है इस लिये जब वो सुबह नाश्ता करके खेलने लगते तो माँ और नानी एक बार उनहे ज़रूरी बातें समझा कर घर से निकलने देतीं बेटा दूर मत निकल जाना और दरिया के पास खेलने बिल्कुल नहीं जाना वक़्त पर घर लौट आना अन्धेरा होने से पहले तुमको घर पर होना चाहिये।

रोज़ रोज़ की बातें सुनकर उनके कान पक गये थे नानी की आधी बातें सुनते और बाकी अन सुनी करके भाग जाते उन्हें तो बस खेलने की पड़ी होती थी।

ऐक रोज़ दोपहर का खाना खाकर वो फिर खेलने निकल पड़े नानी ने फिर टोका नासिर दूर मत जाना आज कल जंगली जानवर भी बहुत घूम रहे हैं और वक़्त पर घर आ जाना नाज़िम का भी ख़याल रखना किसी से लड़ाई नहीं करना।



नानी बोलती रह गयीं और वो दोनों भाग गये नानी और माँ खाना खाकर बाहर धूप में ही बैठ गयीं सभी बच्चे भी बाहर आँखों के सामने खेल रहे थे फिर खेलते ही खेलते वो ना जाने किधर निकल गये जब शाम ढलने लगी तो माँ को बच्चों की फ़िक्र होने लगी नानी उसे हौसला देकर खुद बच्चों को देखने निकल पड़ीं सिर्फ़ दो तीन बच्चे ही खेल रहे थे बाकी कहीं नज़र नहीं आये उसने पूछा तो उन्होंने बताया कि नानी वह सब तो दरिया की तरफ गये हैं कितने बच्चे थे नानी ने पूछा।

नासिर, नाज़िम, बब्लू, शालू शाहिन, और अफ़ज़ल, नानी 6 लोग गये हैं।

ढलते सूरज के साथ अन्धेरा भी बढ़ने लगा पहाड़ों में वैसे भी रात जल्दी हो जाती है। गुज़रते लम्हों के साथ नानी की परेशानी भी बढ़ने लगी उसने साथ के घर से दो जवान लड़कों को साथ लिया और उन्हें दरिया की तरफ तलाश करने निकल पड़ीं।

उधर खेलते खेलते शरारत करते वह छः के छः बच्चे दरिया की तरफ निकल तो आये मगर अन्धेरे से डरने लगे थे उन्हें वक़्त का अहसास ही नहीं हुआ दरिया के पास एक बड़ा सा पेड़ था जिसके ऊपर चढ़ उतर रहे थे फिर

अचानक नासिर का पैर फिसल गया और पेड़ से गिरता गिरता टहनी में जा अटका नीचे देखा तो बहता दरिया उसने टहनी और ज़ोर से पकड़ली और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा उसे रोता और टहनी से लटका देख कर सभी बच्चे सहम गये उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या करें नाज़िम तो भाई को रोता देखकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगा था।

नासिर टहनी ज़ोर से पकड़ कर रखना हम कुछ सोचते हैं बब्लू उन सब में बड़ा था उसने हौसला देते हुए कहा मेरे भाई को बचालो वो दरिया में गिर जाएगा उसे बचालो नाज़िम का रोना बन्द नहीं हो रहा था अन्धेरा बढ़ता ही जा रहा था अब तो वो अकेले भाग कर किसी को बुला भी नहीं सकते थे सभी एक दूसरे को देखकर रोने लगे थे नानी और उन लड़कों को रोने की आवाज़ें सुनाई देने लगी और वो उस तरफ भागे नासिर को पेड़ से लटका देखकर नानी की तो जान ही निकल गयी लड़कों को देखकर सबको राहत महसूस हुई उन्होंने भाग कर लटकते हुये नासिर को नीचे उतारा और वो नानी से लिपट कर बहुत रोया बस एक ही बात बार बार कह रहा था नानी माफ़ करदो आगे से बड़ों का कहना हमेशा मानूँगा।



لالچ بری بلا ہے

حامد نے ہمیشہ کی طرح آج پھر جلدی سے رات کا کھانا کھایا اور دوڑتا ہوا اپنی دادی کے پاس پہنچ گیا۔ وہ جانتا تھا کہ اگر اس نے اور تھوڑی سی دیر کی تو اس کی دادی سو جائیں گی اور وہ کہانی نہیں سن پائے گا۔ ادھر اس کی دادی بھی بڑی بے صبری سے اپنے ننھے اور شرارتی پوتے کا انتظار کر رہی تھیں کیونکہ انہیں بھی اپنے پوتے کو کہانی سنانا بڑا اچھا لگتا تھا۔ آج حامد نے اپنی دادی سے کہا: دادی کوئی سچی کہانی سنائیے۔



دادی نے اپنے پوتے کے سر پر ہاتھ پھیرا اور بولیں: ہاں بیٹا! آج میں تمہیں ایک سچی کہانی سناتی ہوں۔ اللہ کے ایک نبی کی کہانی جس سے ہمیں زندگی کا ایک بہت بڑا سبق ملتا ہے۔ بیٹا! خدا کے ایک نبی جن کا نام حضرت عیسیٰ علیہ السلام ہے۔ جو علاج بیمار یوں کا علاج کیا کرتے تھے۔ مردوں کو خدا کے حکم سے زندہ کرتے تھے۔ اور اس کے علاوہ بہت سے ایسے کام کرتے تھے جو عام انسانوں کے بس میں نہیں ہیں۔ آج میں تمہیں ان کی زندگی کا ایک اہم قصہ سناتی ہوں۔

حامد نے غور سے سنتے ہوئے کہا: جی دادی جلدی سنائیے۔ ایک دن حضرت عیسیٰ اور ان کے تین ساتھی شہر سے باہر کسی کام سے باہر نکلے۔ راستے میں حضرت عیسیٰ انہیں اچھی اچھی باتیں بتاتے جارہے تھے اور وہ سب سر ہلا کر ان کی باتوں کی تائید کرتے ہوئے چلے جارہے تھے۔ چلتے چلتے وہ ایک ایسی جگہ سے گزرے جو بالکل سنسان تھی۔ ایک ایسی جگہ جہاں نہ کوئی انسان تھا، نہ جانور تھا اور نہ ہی کوئی پرندہ۔ حضرت عیسیٰ اور ان کے ساتھیوں نے دیکھا وہاں بہت سارا سونا پڑا ہوا ہے۔

حضرت عیسیٰ نے ایک نظر اس سونے پر ڈالی اور آگے بڑھ گئے لیکن ان کے ساتھیوں کی آنکھیں اتنا سارا سونا دیکھ کر چمک اٹھیں اور ان کے دل میں لالچ پیدا ہوئی۔ حضرت عیسیٰ نے دیکھا ان کے ساتھی سونا دیکھ کر رک گئے ہیں۔ وہ پیچھے مڑے اور اپنے ساتھیوں سے کہا: دوستو! یہ دنیا ہے۔ اس کے چکر میں نہ پڑو۔ یہ تمہیں ہلاک بھی کر سکتی ہے۔ لالچ نہ کرو اور آگے بڑھو۔

کچھ دیر کے لئے حضرت عیسیٰ کے ساتھیوں پر ان کی باتوں کا اثر ہوا اور وہ آگے بڑھ کر دوبارہ ان کے ساتھ چلنے لگے۔ وہ حضرت عیسیٰ کے ساتھ ضرور چل رہے تھے لیکن ان کا دماغ اسی سونے کی طرف لگا ہوا تھا اور ہر ایک سوچ رہا تھا کہ وہ سونا اسے مل جائے۔ اب ان میں سے ہر ایک نے بہانا بنانا شروع کیا۔

ایک نے کہا: اے اللہ کے نبی! میرے پیٹ میں بہت درد ہو رہا ہے میں آگے نہیں چل سکتا اس لئے مجھے اجازت دیجئے میں یہیں رک جاؤں۔

دوسرا بولا: اے خدا کے پیغمبر! مجھے ایک ضروری کام یاد آگیا ہے جس کے لئے ابھی جانا ہوگا اس لئے میں اجازت چاہوں گا۔

تیسرا نے بہانہ بناتے ہوئے کہا: حضور مجھے اپنے بیوی بچوں کے لئے بازار سے کچھ ضروری چیزیں لینا ہیں لہذا میں اجازت چاہتا ہوں۔

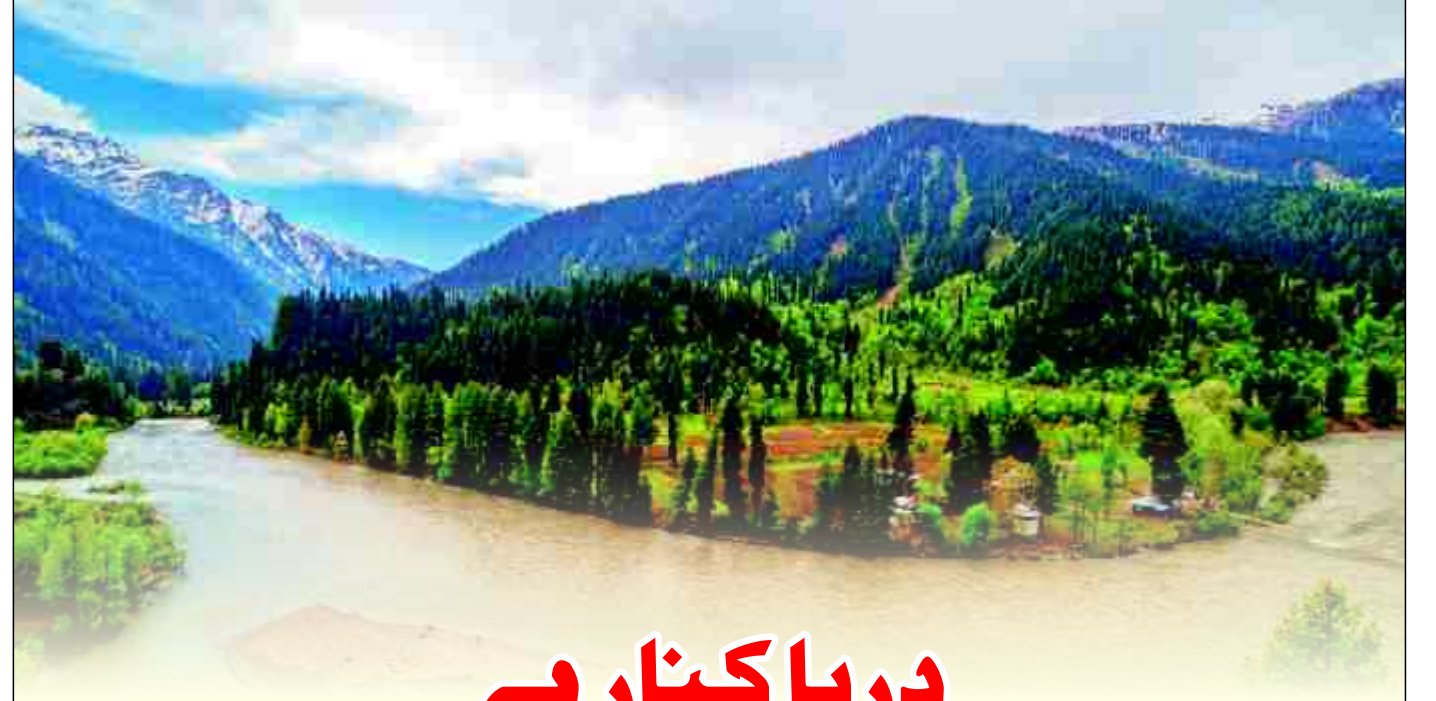
حضرت عیسیٰ جانتے تھے کہ ان کے دل میں کیا ہے لیکن وہ کچھ نہیں بولے اور آگے بڑھ گئے اور ان کے تینوں ساتھی سونے کے پاس آکر اسے چھی طرح الٹ پلٹ کر دیکھنے لگے۔ دوپہر کا وقت تھا۔ سنسان جگہ تھی اور ان تینوں کو بھوک بھی بہت لگی ہوئی تھی۔ ان تینوں نے طے کیا کہ کوئی ایک بازار جا کر کھانا لے آئے۔ پہلے کچھ کھایا جائے اس کے بعد سارا سونا

آپس میں بانٹ لیں گے۔ ان میں سے ایک بازار گیا تاکہ ساتھیوں کے لئے کچھ کھانے کو لائے۔ بازار جاتے ہوئے راستے میں اس کے دل میں خیال آیا کہ پہلے میں خود کھانا کھالوں گا اور اپنے دوستوں کے کھانے میں زہر ملا دوں گا جسے کھا کر وہ دونوں مرجائیں گے اور سارا مال مجھے مل جائے گا۔

اس نے بازار جا کر خود کھانا کھایا اور اپنے دوستوں کے لئے کھانا خرید کر اس میں زہر ملا دیا۔

ادھر اس کے دوستوں نے بھی اسے مارنے کا پلان بنایا اور آپس میں طے کیا کہ وہ جیسے ہی کھانا لے کر آئے گا اسے مار دیں گے اور سارا مال دونوں بانٹ لیں گے۔ وہ جیسے ہی کھانا لے کر آیا اس کے ساتھیوں نے اسے قتل کر دیا اور خود بھی زہر ملا کھانا کھا کر چل بسے۔ لالچ نے تینوں کی جان لے لی اور سونا وہیں پڑا رہا۔

جب حضرت عیسیٰ اپنا کام پورا کر کے واپس آئے تو اپنے ساتھیوں کو اس سونے کے پاس مردہ پڑا ہوا دیکھا۔ انہوں نے خدا کے حکم سے انہیں دوبارہ زندہ کیا ہے اور ان سے کہا: میں نے تم لوگوں سے کہا تھا کہ یہ دنیا ہے۔ اس کے چکر میں مت آؤ۔ لالچ نہ کرو کیونکہ لالچ بری بلا ہے اور انسان کو ہلاک کر دیتی ہے۔ اب تم نے اپنی آنکھوں سے سب کچھ دیکھا ہے لہذا آج کے بعد ہوشیار رہنا اور کوئی غلط کام نہ کرنا۔



دریا کنارے

گرمیوں کی چھٹیلیا منانے کے لئے ناصر اور ناظم اپنی می کے ساتھ چمبا کے پاس اپنی نانی کے گھر جا رہے تھے، دونوں بہت خوش تھے ان کو نانی کے گھر جانا بہت اچھا لگتا تھا وہاں نہ ان کی می انہیں ڈانٹتی تھیں اور نہ شرارت کرنے سے روکتی تھیں۔ پہاڑی کے نیچے اتر کر دس گیارہ گھروں کا چھوٹا سا گاؤں تھا جس کے تھوڑی دور ہی دریا بہتا تھا کھلی فضا، تازہ ہوا اور دریا کے بہتے پانی کا نظارہ انہیں شہر میں کہاں ملتا۔ ان کے ہم عمر اور بچے وہاں رہتے تھے جو ہر گرمیوں کی چھٹیوں میں ان کے آنے کا انتظار کرتے تھے اور پھر وہ خوب مستی کرتے، پڑھائی کا نام دور دور تک نہ لیتے نانی بھی طرح طرح کے پکوان بنا کر کھلاتی تھیں ماں اگر بچوں کو ڈانٹنا چاہتی تو نانی ایسا کرنے نہ دیتیں اور چھٹیاں کب ختم ہو جاتیں انہیں پتہ ہی نہ چلتا۔

نانی کے گھر پہنچتے ہی خبر پھیل گئی اور دیکھتے ہی دیکھتے سب بچے جمع ہو گئے دوسرے روز سے ہی ان کی شرارتیں شروع ہو گئیں، ناصر اب دس سال کا ہو گیا تھا اپنے آپ کو سمجھا اور بڑا



آنکھوں کے سامنے کھیل رہے تھے پھر کھیلنے ہی کھیلنے وہ نہ جانے کدھر نکل گئے جب شام ڈھلنے لگی تو ماں کو بچوں کی فکر ہونے لگی دادی ان کو حوصلہ دے کر خود بچوں کو دیکھنے نکل پڑیں صرف دو تین بچے ہی کھیل رہے تھے باقی کہیں نظر نہیں آئے۔ انہوں نے پوچھا تو بچوں نے بتایا کہ نانی وہ سب تو دریا کی طرف گئے ہیں کتنے بچے تھے نانی نے پوچھا۔

ناصر، ناظم، بہلو، شالو، شاہن، اور افضل، نانی چھ لوگ گئے ہیں۔

ڈھلتے سورج کے ساتھ اندھیرا بھی بڑھنے لگا پہاڑوں میں ویسے بھی رات جلدی ہو جاتی ہے، گزرتے لمحوں کے ساتھ نانی کی پریشانی بھی بڑھنے لگی اس نے ساتھ کے گھر سے دو نوجوان لڑکوں کو ساتھ لیا اور انہیں دریا کی طرف تلاش کرنے نکل پڑیں۔

ادھر کھیلنے کھیلنے شرارت کرتے وہ چھ کے چھ بچے دریا کی طرف نکل تو آئے مگر اندھیرے سے ڈرنے لگے تھے انہیں وقت کا احساس ہی نہیں ہوا دریا کے قریب ایک بڑا سا درخت تھا جس کے اوپر وہ چڑھ اتر رہے تھے پھر اچانک ناصر کا پاؤں

بھسل گیا اور وہ درخت سے گرتا گرتا ٹہنی میں جا اٹکا نیچے دیکھا تو بہتا دریا نظر آیا ناصر نے ٹہنی اور زور سے پکڑ لی اور زور زور سے رونے لگا اسے روتا اور ٹہنی سے لٹکا دیکھ کر تمام بچے سہم گئے۔ انہیں سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ وہ کیا کریں ناظم تو بھائی کو روتا دیکھ کر زور زور سے رونے لگا تھا۔

ناصر ٹہنی زور سے پکڑ کر رکھنا ہم کچھ سوچتے ہیں بہلو جوان سب میں بڑا تھا اس نے حوصلہ دیتے ہوئے کہا، میرے بھائی کو بچا لو وہ دریا میں گر جائے گا اس کو بچا لو ناظم کا رونا بند نہیں ہو رہا تھا اندھیرا بڑھتا ہی جا رہا تھا اب تو وہ اکیلے بھاگ کر کسی کو بلا بھی نہیں سکتے تھے سب ایک دوسرے کو دیکھ کر رونے لگے تھے نانی اور ان لڑکوں کو، رونے کی آوازیں سنائی دینے لگیں اور وہ اس طرف بھاگے۔ ناصر کو درخت سے لٹکا دیکھ کر نانی کی توجہ جان ہی نکل گئی۔ لڑکوں کو دیکھ کر

سب کو راحت محسوس ہوئی انہوں نے بھاگ کر لپکتے ہوئے ناصر کو نیچے اتارا اور وہ نانی سے لپٹ کر بہت رویا صرف ایک ہی بات بار بار کہہ رہا تھا نانی معاف کر دو آگے سے بڑوں کا کہنا ہمیشہ مانو گا۔





بہت سے ہونہار بچے نماز کے وقت سے پہلے مسجد پہنچ جاتے ہیں اور مسجد میں اذان دیتے ہیں۔

شروع کردی۔ یہ یزید کا دور تھا

دربار میں سناٹا چھا گیا۔

کھال، خون اور گوشت خدا کی توحید کی گواہی دیتے ہیں۔

اجنبی آدمی

بہار علی بن الحسین علیہ السلام

باہرنگی تو دیکھا کہ اس کے دو پڑوسی آپس میں باتیں کر رہے تھے اور دونوں کے چہروں سے لگ رہا تھا کہ وہ غمزدہ ہیں۔

عورت نے پوچھا! خیریت تو ہے؟

انہوں نے کہا! کیا تم نے سنا نہیں کہ امام زین العابدین علیہ السلام شہید ہو گئے ہیں۔

دوسرے نے کہا! غسل کے وقت لوگوں نے دیکھا کہ ان کے کاندھوں پر اور پیٹھ پر زخم تھے۔

عورت نے پوچھا! لیکن وہ زخم کس طرح ہو گئے تھے؟

انہوں نے جواب دیا امام علیہ السلام ہر رات کھانے پینے کا سامان ایک بوری میں رکھتے اور وہ بھاری بوجھا اٹھا کر شہر کے گلی کوچوں میں جاتے اور بھوکوں، غریبوں، یتیموں، اور فقیروں کو کھانا پہنچاتے تھے۔

عورت نے سر جھکا کر کچھ سوچا اور پھر گھر کے اندر چلی گئی۔

بچوں نے دیکھا ماں کی آنکھیں انسوؤں سے تر ہیں۔

بچی نے آگے بڑھ کر پوچھا! ماں آپ رو کیوں رہی ہیں؟

عورت نے جواب دیا: تم یتیم ہو گئے، تمہارا سر پرست

امام اور رہبر جو ہر روز تمہارے کھانے کا انتظام کرتا تھا اس دنیا سے رخصت ہو گیا ہے۔

امام زین العابدین علیہ السلام کے زمانہ کی بات ہے ہر روز رات کے وقت جب شہر والے بے خبر سو جاتے تو ایک شخص اپنی کمر پر کھجوریں اور روٹیاں اٹھائے اندھیری گلیوں سے گزرتا ہوا بھوکے اور غریب لوگوں کے گھروں کے دروازوں پر دستک دیتا اور انہیں اس طرح سے کھانا پہنچاتا کہ کسی کو پتہ بھی نہیں چلتا تھا کہ کھانا دینے والا کون ہے۔ کوئی بھی رات کی تاریکی اسے پہچان نہیں پاتا تھا۔

اگر کسی گھر میں کوئی بچہ روتا ہوا اپنی ماں سے کہہ رہا ہوتا کہ اماں میں بہت بھوکا ہوں کچھ کھانے کو چاہئے تو یہ آواز سن کر اس مرد کی آنکھوں میں آنسو آ جاتے اور وہ خداوند عالم سے کہتا "اے پروردگار تو سب بھوکوں کا پیٹ بھر دے۔"

کسی گھر میں ایک عورت اپنی دو چھوٹی بیٹیوں اور ایک بیٹے کے ساتھ رہتی تھی۔ بچوں کا باپ دنیا سے جا چکا تھا یہ عورت اپنے یتیم بچوں کے ہمراہ ہمیشہ اس انتظار میں رہتی کہ کب رات ہو اور دروازے پر دستک ہو اور وہ اجنبی بچوں کے لیے کھانا لے کر آئے۔

ایک رات وہ عورت اپنے بچوں کے ساتھ دیر تک اس شخص کا انتظار کرتی رہی لیکن وہ نہیں آیا۔ اگلی رات بھی اس کے انتظار میں گزر گئی۔ صبح کے وقت جب وہ عورت مجبوراً گھر سے

انار شیریں، خوبصورت اور مشہور پھل ہے اسے جنت کا پھل بھی کہا جاتا ہے۔ اس کا شمار دنیا کے قدیم ترین پھلوں میں ہوتا ہے۔ انار بہت فائدہ مند پھل ہے۔ اس میں چکنائی، کاربو ہائیڈریٹ، پوٹاشیم، کیلشیم، میگنیشیم، ٹانپ، آئرن، فاسفورس، مختلف وٹامنس بالخصوص وٹامن سی پائے جاتے ہیں۔

انار، تین اقسام کا ہوتا ہے ہر ایک کا ذائقہ ایک دوسرے سے مختلف ہوتا ہے مگر عموماً شیریں اور ترش ذائقہ کا انار ملتا ہے۔ اس کا رنگ سرخ رہتا ہے اس کی اوپری چھال سخت ہوتی ہے اندر ایک جھلی میں سرخ یا گلابی رنگوں کے دانے، ترتیب سے جمع رہتے ہیں، یہ دانے بہت شوق سے کھائے جاتے ہیں۔ یہی صحت کیلئے بے حد مفید ہیں۔

ڈاکٹروں کا کہنا ہے کہ انار بہت سی بیماریوں میں کارآمد ہے۔ یہ دل و دماغ کو تر و تازہ رکھتا ہے۔ انار کے

استعمال سے خون کی کمی کی شکایت دور ہو جاتی ہے۔ اس کے استعمال سے کینسر کے امکانات کم ہو جاتے ہیں۔ یہ پھل عام کمزوری کو دور کرتا ہے۔

خون کے سرخ اجزائی (ریڈ سیلسز) کی تعداد میں اضافہ کرتا ہے۔ خون کی خرابی، یرقان، ہڈی بخار اور دیگر بیماریوں میں انار کے استعمال کو انتہائی مفید مانا گیا ہے۔ انار خدا کا عظیم تحفہ ہے جو اس نے اپنے بندوں کو عنایت فرمایا ہے۔ انار تو انار اس کے درخت کی چھال، پھول، پتیاں اور پھل کا چھلکا بھی مختلف امراض کے علاج میں فائدہ مند ہیں، مگر اس کا استعمال، حکیم کے مشورے کے بعد ہی کریں۔

کہا جاتا ہے کہ انار کے درخت کی چھال کے جوشاندہ کی گلیاں کرنے سے مسوڑھوں کے زخم بھر جاتے ہیں۔

انار

امی کیوں روتی تھیں؟

میں دیکھ رہا ہوں کہ امی کتاب اٹھا کر پڑھتی ہیں ورق پلٹتی ہیں اور روتی جاتی ہیں جب سے کتاب ان کے ہاتھ میں ہے ان کی حالت عجیب سی ہو رہی ہے ایک دم بدل سی گئی ہیں۔ مجھے دیکھتی ہیں تو پیار سے میرے سر پر ایسے ہاتھ پھیرنے لگتی ہیں جیسے بہت دنوں سے مجھے نہ دیکھا ہو۔ جب مجھے گود میں لیکر مجھے کچھ کھلاتی یا پلاتی ہیں تب بھی ان کی آنکھوں سے آنسو ٹپکنے لگتے ہیں۔ آخر کیا لکھا ہے اس کتاب میں؟ میں اتنا چھوٹا ہوں کہ پڑھ بھی نہیں سکتا۔ رات مجھے پیاس لگی میں نے پانی مانگا۔ اماں نے مجھے پانی دیا اور پھر آسمان کی طرف سر اٹھا کر کہنے لگیں۔ ”اے میرے خدا! کاش ان بچوں کو بھی پانی مل گیا ہوتا۔“

☆☆☆

ابو نے بھیا کو گود میں اٹھا رکھا تھا وہ روئے جارہا تھا۔ میں امی کی انگلیاں پکڑ کر چل رہا تھا میرے پیروں میں درد ہو رہا تھا۔ تھوری دور چلنے کے بعد میں امی کا ہاتھ چھوڑ کر رک جاتا تھا۔ امی میرا ہاتھ پکڑ کر کھینچ لیتی تھیں۔

ہم لوگ ابھی بھی نہیں پہنچے تھے۔ ایک بار پھر میں نے امی سے ہاتھ چھڑایا اور سڑک کے کنارے بیٹھ گیا۔ امی اور بابا بھی آگئے امی نے پیار سے کہا ”میرے لال چلتے کیوں نہیں، دیر ہو رہی ہے۔“

میں نے کہا ”امی بہت تھک گیا ہوں، پیروں کی انگلیوں میں درد ہو رہا ہے، چلا نہیں جاتا، پیاس بھی لگی ہے۔“

امی نے بھڑائی ہوئی آواز میں کہا ”سوچو وہ بچے، ننگے پیر دھوپ میں کیسے چلتے ہوں گے؟“

کون سے بچے امی؟ میں نے پوچھا! امی نے ایک آہ بھر کر مجھے گود میں لے لیا۔ اور کہا۔ اٹھو بیٹا یہ نئے جوتے تمہیں پریشان کر رہے ہیں۔ چلو اب زیادہ دور نہیں ہے۔ جلدی پہنچ جائیں گے۔“

☆☆☆

ہم لوگ ایک جگہ پہنچے جہاں بہت سارے لوگ جمع تھے۔ باہر کچھ لوگ ٹھنڈا پانی پلا رہے تھے۔ اندر ایک آدمی مانک پر کچھ پڑھ رہا تھا۔ میں نے

دیکھا سب کے سر جھکے ہوئے ہیں لوگ رو رہے ہیں کچھ تو بہت زور زور سے رو رہے ہیں۔ میں نے دیکھا امی بھی رو رہی ہیں۔

میں نے کہا! ”امی کیا وہ کتاب یاد آگئی جو آپ رو رہی ہیں؟“

امی نے آنسو پونچھ کر کہا۔ نہیں بیٹا۔ میں تو ان بچوں کو یاد کر کے رو رہی ہوں جو پیاسے تھے۔ جن کے ننھے ننھے پیروں میں تمہارے پیروں کی طرح چھالے پڑ گئے تھے۔ جن کے پیروں میں چلنے سے درد ہو رہا تھا.....“

☆☆☆

امی نے پھر کتاب اٹھائی۔ صفحہ پلٹے۔ پڑھ کر رونا شروع کیا۔

بھیا نے بھی اٹھ کر رونا شروع کیا وہ بھوکھا جو تھا، امی نے اسے گود میں لے کر دودھ پلانا شروع کیا، آنکھوں سے آنسو جاری تھے۔

میں نے امی سے کچھ نہیں پوچھا، مجھے پتا ہے بھیا بھی چھ مہینہ کا ہے۔ اس چھ مہینے کے پیارے اور پیاسے بچے کے برابر جس کی پیاس کا ذکر مانک سے ہو رہا تھا اور جس کے واقعہ کون کر لوگ رو رہے تھے۔

تفسیر قرآن

سورہ قریش

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا إِلَافَ قُرَيْشٍ ﴿١﴾ إِلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ
وَالصَّيْفِ ﴿٢﴾ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ﴿٣﴾
الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ وَآمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ ﴿٤﴾
قریش کے انس و محبت کے لئے جو انہیں سردی
اور گرمی کے سفر سے ہے،
ابرہہ کو ہلاک کر دیا اس لئے وہ اس گھر کے
مالک کی عبادت کریں
جس نے انہیں بھوک میں سیر کیا ہے اور خوف
(ڈر) سے محفوظ بنایا ہے
مکہ میں زندگی بسر کرنے والے اہم قبیلوں میں
ایک قبیلہ کا نام ”قریش“ تھا۔ ہمارے آخری نبی اسی
قریش کے قبیلہ سے تعلق رکھتے تھے۔ آپ کے آباء و

اجداد ہی اکثر اس قبیلہ کے سردار رہے ہیں۔ مکہ کی
آب و ہوا بہت اچھی نہیں تھی اس لئے وہاں کھیتی
وغیرہ بھی اچھی نہیں ہوتی تھی۔ لہذا مجبوراً مکہ والوں کی
طرح قریش بھی تجارت کے ذریعہ اپنا خرچ چلاتے
تھے اور موسم کے لحاظ سے سال میں دو بار تجارت کے
لئے باہر جاتے تھے۔

وہ سردیوں میں ”یمین“ جاتے تھے کیونکہ وہاں کا
موسم گرم ہوتا ہے اور گرمیوں میں ”شام“ چلے جاتے
تھے کیونکہ وہاں کا موسم ٹھنڈا ہوتا ہے۔

قریش، اسلام سے پہلے تجارت کے لئے سفر
کرتے رہے۔ پچھلے زمانہ میں آج کی طرح نہ سڑکیں
تھیں اور نہ حفاظت کے لئے پولیس۔ اس لئے سفر کے
دوران تجارتی قافلوں کو اکثر و بیشتر لوٹ مار کا خطرہ رہتا
تھا۔ اس طرح تجارت کے لئے نکلنے اور پیٹ بھرنے
کے لئے روپیہ پیسہ کمانے میں ایک طرف سردی گرمی
کی پریشانی تھی اور دوسری طرف لوٹ مار کا خطرہ۔

ایک تو مکہ تجارت کا مرکز تھا اور اس کے علاوہ
دوسرے شہر والے ”قریش“ کا ایک اور وجہ سے بھی
احترام کرتے تھے۔ خاص کر وہ لوگ جو مکہ کے قریشی
شہروں میں رہتے تھے۔ مکہ والوں کو ”خدا کے حرم کا
مجاور“ کہا جاتا تھا اور ان کو ”اللہ والا“ مانا جاتا تھا۔ یہ

احترام اس وقت اور زیادہ ہو گیا جب ابرہہ خانہ کعبہ
پر حملہ کرنے کے لئے آ رہا تھا لیکن خدا کے حکم سے وہ
چھوٹے چھوٹے پرندوں (ابابیل) سے ہار گیا۔ اگر
ابرہہ خانہ کعبہ کو گرا دیتا تو لوگ ”قریش“ کا احترام نہ
کرتے اور وہ امن و امان کے ساتھ تجارت بھی نہیں کر
سکتے تھے۔

اللہ نے ابرہہ کو ہلاک کر دیا تاکہ مکہ والے اسی
طرح کعبہ سے محبت کرتے رہیں اور وہ مکہ ہی میں
بڑے آرام اور سکون سے رہیں۔ اس نے ان کے
کھانے پینے کا انتظام (بندوبست) بھی کر دیا اور اس
کے ساتھ ساتھ مکہ کو امن و امان کی جگہ بنا دیا۔ یعنی اب
ان کے لئے کوئی خطرہ نہیں ہے۔ مکہ میں کسی کو مارنا،
ایک دوسرے سے لڑائی جھگڑا کرنا منع ہے۔ یہی وجہ
ہے کہ یہ شہر ہمیشہ آباد اور خوشحال رہتا ہے۔ پورے

سال دنیا بھر کے مسلمان یہاں آتے ہیں اور عمرہ
کرتے ہیں۔ ذی الحجہ کے مہینہ میں تو لاکھوں حاجی حج
کرنے آتے ہیں۔ پوری دنیا کے کالے گورے، امیر
غریب، مرد عورت، بچے اور بوڑھے ایک ساتھ حج
کرتے ہیں اور سب صحیح و سالم اپنے اپنے گھر واپس
آ جاتے ہیں۔

خدا نے مکہ والوں کو یہی حکم دیا ہے کہ اس نے کعبہ
کی وجہ سے تمہارے شہر کو اتنا اہم شہر بنا دیا ہے اس
لئے اب صرف کعبہ کے رب (خدا) کی ہی عبادت کیا
کرو۔ اس کے علاوہ کسی اور کی عبادت نہ کرنا۔
اگر کوئی نماز میں سورہ حمد کے بعد سورہ فیل پڑھے تو
اس کے ساتھ سورہ قریش
پڑھنا بھی بیضروری ہے یعنی یہ دوسرے مل کر ایک سورہ
ہوتے

الفاظ کے معنی:

إِلَافٌ : الفت و محبت پیدا کرنا	قُرَيْشٌ : مکہ کا سب سے بڑا خاندان (یہی خاندان رسول خدا کا بھی تھا)
رِحْلَةٌ : سفر	الشِّتَاءِ : سردی
يَعْبُدُوا : وہ عبادت کریں	رَبِّ : خدا، مالک
بَيْتٍ : گھر	أَطْعَمَ : اس نے کھانا کھلایا
جُوعٍ : بھوک	آمَنَ : امان دی، امن و امان میں رکھا
	خَوْفٍ : ڈر، دہشت
	هَذَا : اس، یہ
	هُمُ : وہ (ان کو)
	الضَّيْفِ : گرمی



ماہنامہ **طوبیٰ**

اکتوبر ۲۰۱۶ء